International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 3, May-Jun, 2023, Impact Factor: 7.326

''तारागढ़ झुलपुर के गौंड राजाओं के राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि''
(मण्डला जिले नैनपुर तहसील के विशेष संदर्भ में)

श्रीमती सुन्दरवती यहके

सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र विभाग) शासकीय महाविद्यालय मेंहदवानी जिला–डिन्डौरी (म.प्र.)

सारांश :–

मध्यप्रदेश मण्डला जिले का गोंड़ राजवंश 664 ई.से प्रारंभ होता हैं। जिले के कई मंदिरों में लगे ग्रेनाईट पत्थरों पर गौंडो का उल्लेख हुआ हैं। गौड पूर्वजों को यंहा सम्मान से गौंड बाबा और उनके निवास स्थान को गौडवानी कहा जाता हैं। ये लोग अधिकतर अपना मनोरंजन खेतों एवं जंगलों मे करते थे। जनपद, जनमानस में यह धारणा हैं। कि गौंड आदिवासी अपना बहुत सा चांदी, सोना, बर्तन, मिट्टी बर्तन इत्यादि जमीन में दबाकर रखा है। कहा जाता है, कि अंग्रेजों के साथ युद्ध से पहले उन्हें पता चल चुका था कि अंग्रेजों द्वारा उनके सम्मपत्ति लूटकर विदेश ले जायेगें। इसके कारण चांदी, सोना, बर्तन, एवं मिट्टी के बर्तन को जमीन के अन्दर दबाकर रखना पड़ा जो आज साक्ष्य के रूप में देखने को मिलते हैं। इसी कारण मध्य भारत के एक बहुत बडे भू–भाग को गौंडवाना के नाम से जाना जाता है। इसे पहले गढ़ा भी कहते थे, इस तरह गौंड राजाओं ने 15 वीं सताब्दी में 4 महत्वपूर्ण गौंड सम्राज्य स्थापित किये थे, जिन्हे खेरला, गढामण्डला, देवगढ, और चांदागढ, प्रमुख थे। गौंडवाना की प्रसिद्ध रानी दुर्गावती, राजगौंड़ राजवंश के रानी थी। तारागढ़ झुलपुर की तारादेवी, जूनादेवी तथा महाराजा भोजराज दुर्गावती के जनपद से संबंधित थे। लेकिन शोधार्थीओं के द्वारा इसका जिक्र मण्डला के पर्यटन क्षेत्रों में आज तक नहीं लिखा गया, वंहा के साक्ष्यों से पता चलता है, कि वंहा गौंड राजाओं के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभ्यता की पहचान अलग ही दिखाई देती हैं। जिसे देखकर हम उनकी परस्थितियों को प्रकाशित कर सकते हैं।

कुजी शब्द :– आदिवासी गौंड़राजा, सभ्यता, जीवनयापन, आर्थिक विकास, साक्ष्य

प्रस्तावना :–

मण्डला जिले के नैनपुर तहसील का ग्राम तारागढ झुलपुर जिसमें आदिवासी राजाओं के साक्ष्य देखने को मिलते हैं। तारागढ़ झुलपुर गौंड़रानी तारादेवी के नाम पर रखा गया है। वहां की एक प्रसिद्धि यह कि अंग्रेजों के समय में जब यहां के राजा तथा आदिवासी रानी दुर्गावती से युद्ध हुआ था। उस समय आक्रमण के कारण तारागढ़ का महल ध्वस्त या गिर गया। वहां के निवासियों द्वारा बताया जाता है, कि तारागढ़ महल का संबंध मण्डला किला नामनगर से था। आमजन ये भी कहते हैं, कि तारागढ से मण्डला किला तक आने–जाने का रास्ता था। एक सुरंग के माध्यम से आदिवासी राजाओं का आना–जाना होता था जिकसे बहुत सारे ऐसे साक्ष्य उपलब्ध हैं। जिसे निहारने से लगता है कि आदिवासी गौडराजों की परंपरा धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक बहुत ही आकर्षक है। जो आज तक किसी अनुसंधान कर्ताओं द्वारा आज तक कोई जिक्र नहीं किया। मण्डला से 20 कि.मी. दूरी होने के कारण किसी शोधार्थी का ध्यान आर्कषित नहीं किये और किसी भी पुस्तक में इसके बारें मे नहीं लिखा गया। इस साक्ष्यों से उनके शासन चालाने तथा शासन करने एवं सामाजिक व्यवस्था का समझ में आती हैं। जो लुप्त हो चुके हैं। उन्हें जाज्वल्यामान करने आवश्यकता हैं।

तारागढ़ झुलपुर का समान्य परिचय :– तारागढ़ झुलपुर आदिवासी क्षेत्र हैं। वंहा गैर आदिवासी न के बराबर पाई जाती है। यह एक छोटा सा गांव है, मण्डला जिले के नैनपुर तहसील के अंतर्गत आता है। तारागढ़ झुलपुर को जो रास्ता है। यह घनसौर रोड ग्राम भिलाई से अंदर की ओर जाना पड़ता है। वर्तमान तारागढ़ झुलपुर का विधायक माननीय देवसिंह सैयाम जी चुनाव में विजय हुए है। हम इस क्षेत्र की शिक्षा के स्तर की बात करें तो उनकी स्थिति निम्न साथ ही आर्थिक स्थिति उतनी भी अच्छी नहीं हैं। इस प्रकार तारागढ़ झुलपुर में जनवरी माह में 3 दिवसीय मेला का आयोजन बसंत पंचमी के अवसर पर लगाया जाता हैं। इस मेले में आस–पास सभी क्षेत्रों के लोगों का आंगमन होता है। इस जगह में मेला लगने का उद्देश्य तारागढ महल तथा खेल प्रतियोगिताएं जैसेः– फुटबॉल, बॉलीबाल, कबड्डी, खो–खो, कुर्सी दौड़ आदि मेले के बहाने लोग तारागढ़ झुलपुर तारादेवी महल देखने आते है।

प्रमाणित साक्ष्य :– 1. गुरिया 2. ओखली 3. हवन कुण्ड 4. विवाह 5. नगाडे 6. महल का गिरा भाग।

गुरिया :– तारागढ़ झुलपुर तारादेवी का क्षेत्र लगभग 5–10 मीटर में फैला हुआ हैं। वंहा के आस–पास के क्षेत्रों में गुरिया मिलती है। वह गुरिया कि विशेषता यह हैं कि वह गुरिया काला रंग, उसके आस–पास धागानुमा सफेद पट्टी, बीच में छिद्र होता हैं। इस गुरिया की वजन 10 ग्राम लगभग और इसकी मूल्य 80 हजार से 1 लाख होता है। तारागढ़ झुलपुर के आस–पास जितने भी गांव है। उस सभी गांव में 5 कि.मी. के क्षेत्रफल में खुदाई के दौरान, जानने वाले व्यक्ति के लिये चलते फिरत गुरिया मिल जाता है। सभी लोग अपने खेतों की खुदाई करते रहते हैं। और ये गुरिया प्राप्त करतें है। जिससे उनकी आर्थिक व्यवस्था बनी रहती है। इन गुरियों का सही मूल्य किसी को नहीं पता। वंहा बाहर से लोग आते है और सस्ते कीमत पर खरीद कर ले जाते है। इन गुरियों को बाहर विदेशों में विक्रय किया जाता है। लेकिन इन गुरियों का उपयोग किस लिये किया जाता हैं। इसका अनवेषण अभी जारी है। जो लोग इसका क्रय करतें है। उनसे पूछने पर भी अभितक कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुआ है।

उखरी (ओखली) :– उखरी का तात्पर्य यह हैं कि लकड़ी/पत्थर को वृत्ताकारनुमा एक या आधा फिट गहरा कोटर बना लिया जाता हैं। उसे उखरी कहा कहते है। मूसल जो लकडी का बना होता उसके नीचे लोहे की पट्टी लगाई जाती है। यह 3 फिट लम्बा होता हैं। जिसके माध्यम से पूर्वज आदिवासी गौड रानियां कोदो, कुटकी, को कूटने का कार्य करती थी। उस समय में उनके पास चक्की मशीन की सुविधाएं नहीं थी। इसलिये अपने दैनिक भोजन की व्यवस्था उन्ही से करती थी। ये साक्ष्य अभि भी विद्यमान है इससे पता चलता हैं, कि पुराने जमाने में गौडराजा अपने ही घर में सारे कार्य किया करते थे। व्यवसायी लोगों को कीमत देने की जरूरत नहीं पड़ती थी। तथा उनकी अर्थव्यवस्था भी बनी रहती थी।

हवन कुण्ड :– हवन कुण्ड को देखकर यह पता चलता हैं। कि आदिवासी गौडराजाओं द्वारा हवन भी किया जाता था। चाहे वह विवाह में या कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम में हो हवन कुण्ड में धूप दी जाती थी और आज भी गौड आदिवासियों में छैना (गोबर का कण्डा) से ही धूप दिया जाता हैं। उन साक्ष्यों को देखकर यह प्रतीत होता हैं। कि सभी गौंडराजा एक–दूसरे के यंहा परंपरा निभाने के लिये एकत्रित होते थे। तथा सामाजिक कार्य करते थे। गौड आदिवासियों में एक आदिवासी वैद्य होता था, और वर्तमान में भी यही परम्परा हैं। इनके द्वारा सारे काम नियम से किये जाते हैं। साथ ही जो भी दान दक्षिणा होता है। उसे ही दिया जाता हैं। ताकि कोई गैर आदिवासी को कार्य का मूल्य देने की जरूरत नहीं पड़ती। और गौड राजाओं की आर्थिक स्थित बनी रहती थी।

विवाहः– गौड आदिवासी राजाआ की परंपरा विवाह की परंपरा गैर आदिवासियों से अलग होती थी। उन्हे 1 से ज्यादा रानियों से विवाह करने की परंपरा थी तथा रानियों को भी किसी प्रकार की समस्या नहीं होती थी। मण्डला जिले के गौडराजाओं के बारे में अध्ययन करने से पता चलता हैं। कि वे निम्न प्रकार से विवाह कर सकते हैं।

1. एक विवाह
2. बहु विवाह
3. अर्न्तजातिय विवाह

एक विवाह :– मण्डला जिले के गौड राजाओं द्वारा एक विवाह भी किया जाता था।

बहु विवाह :– अधिकतर गौड आदिवासी राजाओं द्वारा बहु विवाह किया जात हैं। तथा उनके बाद बहु विवाह रही होगी आदिवासियों में प्रचलन रही लेकिन वर्तमान समय में सरकार के योजनों से प्रेरित होकर बहु विवाह नहीं किया जाता यह नाम मात्र के लिये बचा है।

अर्न्तजातिय विवाह :– रानीदुर्गावती राजपूत राजवंश की रानी थी। लेकिन राजकुमारी दलपत शाह के गुणों स प्रभावित होकर उनसे विवाह की इच्छा जाताई लेकिन रानीदुर्गावती के पिता गौड़वंश होने के कारण सहमति नहीं दी लेकिन दलपत शाह के पिता रानीदुर्गाती को अपन घर की रानी बनाना चाहते थे। और वह गौंड वंश की रानी बन गई। जो अंतर्राजातीय विवाह में आता हैं। इससे लगता हैं। गौड़ आदिवासी राजाओं में अंतर्राजातीय विवाह की थी साथ ही किसी प्रकार के अर्थ व्यवस्था का नुकसान भी नहीं हुआ।

नगाडे :– गौंड आदिवासी राजाओं के पंरपरा का एक अंग माना जाता इसके द्वारा कोई भी शुभ कार्य या अशुभ कार्य नहीं किये जाते थे, जैसे विवाह, बच्चे का जन्म, देवी देवताओं का पूजा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, मृत्यु इत्यादि इन सभी कार्यों में नगाड़े वादयंत्र को बहुत ही शुभ मानते हैं। अगर इस वादयंत्र को शामिल नहीं किया जाता तो मानते है, कि देवी प्रसन्न नहीं हुई है। इस प्रकार इस वादयंत्र को देखने से लगता है। गौड आदिवासी राजाओं में नगाडे वादयंत्र की पंरपरा प्रचीन समय से चली आ रही है। साथ ही इन्हे लगता है। वर्तमान समय में जितने भी गौड आदिवासी राजाओं की पंरपरा है उन्हें लुप्त होने से बचाने या संरक्षित करने की आवश्यकता है। इससे आदिवासी सामाज की पंरपरा के साथ–साथ उनका पैसा भी बना रहना चाहिए ताकि सभी आदिवासियों द्वारा इस वादयंत्र का लाभ मिल सके। और हमारी पंरपरा सदियों से चली आ रही हैं। वह भी बनी रहे ताकि आदिवासी समाज का आर्थिक लाभ समाज को ही मिलती रहे।

अन्य :–

जलाशय कुण्ड :– जलाशय कुण्ड उस कुण्ड को कहते हैं। जहां गौड आदिवासी राजा वंहा के जल को गौड़ देवी–देवाओं में सम्पूर्ण सम्पत्ति को शुद्ध करने में किया करते थे। यह भी माना जाता हैं। कि वंहा का पानी इस जलाशय कुण्ड में हमेशा उपलब्ध रहता है।

शिल्पकला :– शिल्पकला उसे कहते हैं। जो पत्थरों में दोस दियोमिर बनाये जाते हैं इसके साथ तारागढ झुलपुर स्थान पर खुदाई के दौरान जो पत्थर निकाले गये हैं वे अति प्राचीन हैं। इससे यह कह सकते हैं, कि गौड राजा शिल्पकला का कार्य करते थे। या कारीगर के माध्यम से कराये जाते थे।

नगाड़े दोहार/थावंर बांध :– नगाड़े दोहार/थावंर बांध को पुराने समय में नगाड़े दोहार के नाम से जानते थे वर्तमान समय में थामर बांध बनने के कारण इसे थावंर बांध कहने लगे हैं। नगाड़े दोहार कहने के पीछे एक राज छुपा हुआ है। कहा जाता है कि नगाड़े दोहार में आदिवासी गौडों का पूरा बरात वर, वधू सहित सभी डूब गये थे। तब से नगाड़े दोहार नदी को नगाड़े दोहार कहा जाने लगा। लोगों का मानना हैं कि कभी–कभी इसी नदी में नगाड़े की आवाज सुनाई देती हैं।

निष्कर्ष :–

मण्डला जिले के गौंड आदिवासी राजाओं के वंशजों का एक अंश तारागढ झुलपुर में विद्यमान है। वंहा के साक्ष्यों से पता चलता है। कि गौंड़ वंशज तारागढ झुलपुर में आदिकाल प्राचीन काल में निवासरत रहे होंगे अंग्रेजों के आक्रमण एवं तोड फोड से तारागढ़ झुलपुर का महल जमीन में नीच धस गया हैं। साथ ही महल वर्षा के समय चारों ओर से नदी के पानी से घिरा रहता है। इस नदी को नगाड़े दोहार प्राचीन समय में कहते थे। वर्तमान समय में थावंर बांध कहते लगे इस प्रकार तारागढ झुलपुर विख्यात होने बाद भी वहां के गौड राजाओं के बारे में किसी इतिहास में उल्लेख नहीं है। हमारा उद्देश्य हैं, कि हम इस लुप्ल गौंड आदिवासी राजाओं के महल, उनका क्षेत्र, थावर बांध को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय तक प्रासारित होना चाहिए इसके साथ ही गौंड राजाओं, के ऐतिहासिक धरोहर तारागढ झुलपुर को एक राष्ट्रीय ऐतिहासिक पर्यटन घोषित की जानी चाहिए जिससे सरकार की निगरानी एवं संरक्षण प्राप्त हो सके, इन्ही बिन्दुओं पर शोध की महत्व भूमिका आधारित है।

संदर्भ सूची :–

1. कृपाल सिंह गौंडः कावेरी टोला झुलपुर वार्ड मेंबर, तह. नैनपुर, जिला मण्डला, म.प्र. उम्र 50, 12 / 03 / 2023 ।
2. नवल सिंह गौंडः कावेरी टोला झुलपुर भूतपूर्व उपसरपंच, तह. नैनपुर, जिला मण्डला, म.प्र. उम्र 65, 18 / 03 / 2023 ।
3. गोविन्द सिंह गौंडः कावेरी टोला झुलपुर कृषक मित्र, तह. नैनपुर, जिला मण्डला, म.प्र. उम्र 55, 12 / 03 / 2023 ।
4. मुलिया बाई गौंडः रामदेवरी, झुलपुर ग्राम की बुर्जुग महिला, तह. नैनपुर, जिला मण्डला, म.प्र. उम्र 80, 02 / 04 / 2023 ।
5. गीता बाई गौंडः कावेरी टोला झुलपुर जागरूक आम नागरिक, तह. नैनपुर, जिला मण्डला, म.प्र. उम्र 45, 22 / 04 / 2023 ।